

विषय सूची	पृष्ठ संख्या
शुद्धाचार सङ्ग्रह (कविता)	३
विशुद्ध गणन (कविता)	४
"शुद्धाचार सङ्ग्रह" के तीनों भागों का प्रकाशन	५
समाप्ति	६
चित्रकला से प्रभावित "शुद्धाचार सङ्ग्रह" का द्वितीय विवरण	८-१०
नवविशुद्ध सङ्ग्रह	११-१२
प्रतिभा के विकास	१३-१४
"शुद्धाचार सङ्ग्रह" का द्वितीय विवरण और आगे के विकास	१५-१८
"शुद्धाचार सङ्ग्रह" का तृतीय विवरण	१९-२०
समाप्ति	२१
(I) श्री रामचन्द्रका कुलपति	
(II) श्री रामचन्द्रका कुलपति	
(III) श्री रामचन्द्रका कुलपति	
IV. विषय सूची का अन्तर्गत	

विषय सूची.

श्री श्री

श्री श्री

श्री श्री

श्री श्री

७

८

९

१०

क्रीडा - पत्र

वधम प्रभात इति तव गाने
उत्थम आभस्व तव तपोवन ॥

क्रीडा विभाग का मुख पत्र 'क्रीडा पत्र'

वर्ग
२८

अभारद - नीचम गो

मद्रास
२०.३.

अनुधातु मधुर्क

किया मद्रास स्थापित का सौख्य नर उठा ।

अभारद मद्रास मद्रास का अन्तार ॥

कहते लोग कली हा छोड़ रहा पर नार ।

हिमिदि मुरसरि सो रत अहो/मद्रास बरिहार ।

भारत के जाँ सनी, जाग जननी के छूत ।

धूमर से ठुहिके, कर दी छूत अष्ट ॥

पर मे जा अन्तार के गिया मद्रास मद्रास ।

अन्तार औ पत्र मद्रास लको दैत आ देव ॥

पुस न समी सरकार की विस ठर मे सगीत ।

देश मद्रास की गालियों हुई नसी लवलीत ॥

मद्रास की मेदि पर पियो सीत बलिदत्त ।

लेख राग के सत्सरमा सुमी राग महान ॥

आरतिल के मद्रास का गलत । मद्रास परीष ।

मद्रास मद्रास लको रहे सगीत सदा
सगीत

(श्री प मद्रास वि जी मद्रास)

कवि सुख सेसी तन सुनाओ गिरतो १ १११ गच्छाए,
 एक हिलोइ इधर से आये - एक हिलोइ उधर से आए,
 प्राणों के लाले पड जाँए, नाहूँ नाहि रन नम मे द्योए,
 नाश और सखायाही नाहूँ धुँकों धर जाये द्योआये,
 भरसे आन जलद जलजायें भस्म भात भूषर होजावेये,
 धन पण्य सहस्रद भले की धूल उड अउ दहों नाये,
 नभका बरष स्थल पड जाए, तारे टक टक हो जाँए,
 न रि सुख सेसी तन सुनाओ - जिससे उथल पुथल मच जाए,

x x x x x x

माता की अमृतमय द्यौती का पग कालकूट हो जाए,
 आदलो का घसी सुखे, हँ - बह रूपा नी धूर हो ,
 इ ओर कायस्थ को गतागुणति विगलित हो जाँए,
 अन्ध दूध निचरो की बह - अचल शिल विथलित हो जाए,
 ओ' बूझी ओर भेषनेवाला - गर्जन उड जाए,
 अलरिक्ष में एक उछी - नाशक तर्जन की धनि मडराए,
 कवि सुख सेसी तन सुनाओ गिरतो २ ११२ गच्छाए,

x x x x x x

निमज और अनियमो के - ये नथल डूक डूक हो जाए,
 निश्चयन की पोमक नीरामो - सन तन दूक हो जाए,
 शानि दण्ड हूँ - उस गह कद्र का सिद्धसन धर्याए,
 उसमी शोभक छह शवसोच्छ्वस विरहने प्राकृगने बहुराए,
 नाश नाश ॥ हा म्हानाश ॥ की प्रलयद्वारी अंतर सुब जाए,
 कवि सुख सेसी तन सुनाओ - जिससे उथल पुथल मच जाए ॥

x x x x x x

श्री 'नवीन'

* OM *

Shradhanand Sports Tournament

PROGRAMME

27th July, Saturday Evening.

4. to 4.30. Band & National song.
4.30. to 7. Wrestling.

28th July Sunday Morning.

6. to 6.30. Band & National song.
6.30. to 7. Acharya ji's speech.
7. to 8. Ravan race & Archery.
8. to 8.30. Pillow fight.
8.30. to 9.30. Obstacle race.
9.30. to 10. Frog race
10. to 10.30. Chair race

Evening.

4. to 6. Lion race.
6. to 6.30. Diving.
6.30. to 7. Swimming under the water.

29th July Monday Morning.

6. to 6.30. Band & National song.
6.30. to 7. Hundred yards, race.
7. to 7.30. Long jump.
7.30. to 8. High jump.
8. to 9. Gymnastics.
9. to 9.30. Putting the weight.
9.30. to 10.30. Long race.

Evening.

2. to 7. Long swimming.
7. to 8. Havan & feast.

Note. In addition to this, some time will be set apart for fencing.

SHVETKETU.
Games Secretary

G. K. P.

સ્વર્ણ-રેણુ

૧

સ્ત્રી-ધર્મના જીવન (ગમન ને પ્રત્યેક સેત્ર ને) ની સર્વસેષ સાધના છે. પરમી
વ્યવહાર છે. નિઃસ્વર્ણ ના પોર ને વેળા. રિયલેન્સ મી વળી કર ને રહે ની રૂપ
અસર છે.

૨

જાનો ના ની ગમન રૂપા બરમા છે પર વિતતી કાશ્ચર્ય ની જાત છે. જો
જાનો ના મે રિકા દિકી છે. નીવળ બધુવા જીવનનાર મિદાન છે. મરકે
પોર્ત ની રિકા ના નાજી છે.

૩

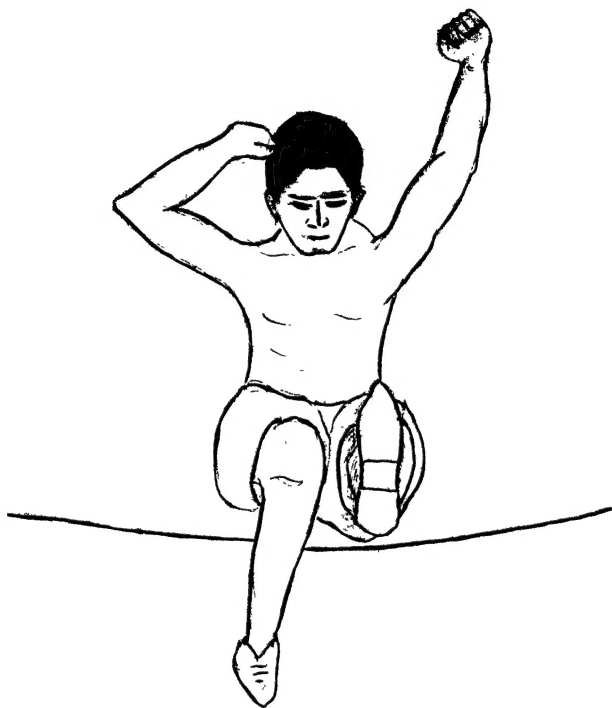
હવે જાણ છે. જાત ની મતજબ મનનની શિષ્યો રહેલાં સ્ત્રી સ્વ
તોત ના જુદા પિલા લેતી છે તો ઉમે પ્રશ્ન ના સ્ત્રી સોન ના જુદા પિલાને ને લિપ
વક્તે સોન મે જાતી બરદની છે. રૂપ કમજુર નાગમ લી મુલ્ય છે.

૪

બીજી જાણ છે. ગારલ ને માંસ. સોન-બા મી સ્ત્રી ને સોન રૂપ છે. નસન
મે રૂપ મી ને રૂપ ને મોજા છે. ને સોન રૂપ છે. તમાં કારે માંસ મી
ના. મરતમ કાષ્ચર્ય રિકાકે દે રહે છે.

શ્રી સંવરે રૂપ વિદ્યા રૂપ

उत्ती २५६



अधराल से प्रतीक्षित
"अदधानदुलो" सो-मुन्म "वा (४८)।

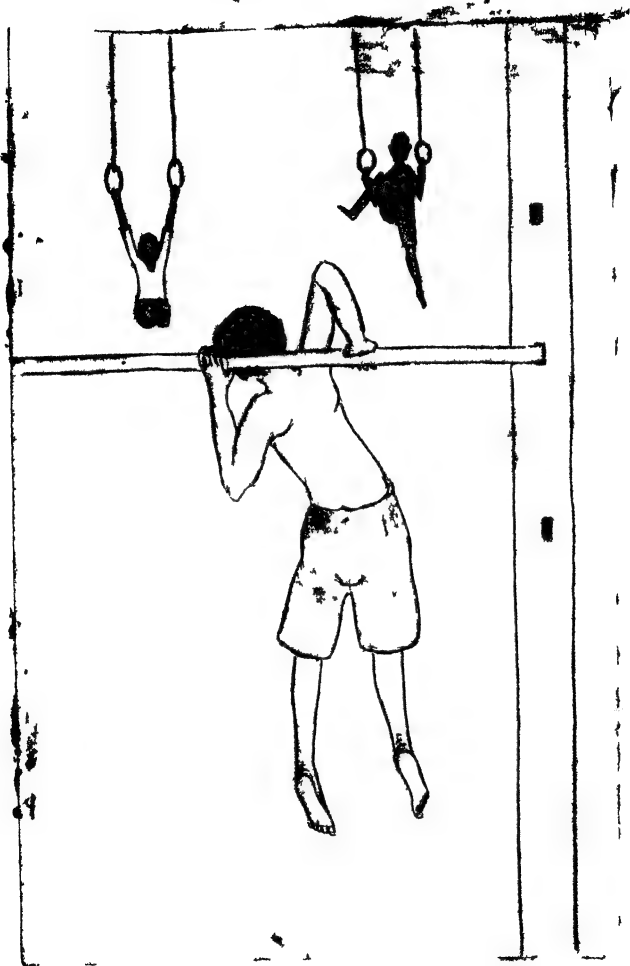
बिना आल से उती सिंग, शुद्ध आगद दुनिरे के छितीन प्रियम बरे कोन
 नमो के साथ मंगामो जगल ह्यारी मंखो ने देओ शुद्ध आगद के पवित्र नाम के
 दिख जाते जाणे दुनिरे से प्रथम विहोयता यह छी नि दुखने आनिन
 कोइए रूप देओलने निमाम के। मजोनि नमो के होयता के की आनामी
 के आनिन उपे पहुँचा। वह उपेय की के दिगती संजल रकल था
 यह होयता की ही छी।

ने कोई भी। हम आमतौर पर सच्चे व्यक्ति होते हैं। एक बात और
 यह है। British government से आया पागल पड़ा है। केसी बन्दि बन्दी
 बनने से पहले तो सारा नष्ट कर दिया। अब उसे हमें अपने शरीर में
 ले लाना है। और अब तक समझ रहे जब कि हम लोगों को जे सा न
 है। यह भी हमारी न हो तो हमें जान सके से यह सब महत्वपूर्ण है।

२२। यहि गुरुजी ने बातें रचल जहाँ चले से भू-भारत के गुरुजी ली
इसके उपरान्त नीतिशिरा पुष्ट विचारों ने हलके सामने प्रकाश में
अर्थात् नये नये व्यवस्था किन नये कृति गुरुजी ने दे गये सामने कि
ये । एक गते पर अर्थात् वेध करता निश्चित था । वेधन के लिए प्रतीत होये थे
की । इन्होंने भी की कार्य में ली । इन्होंने सत्यवादी के अपने नाम के अर्थ पर ली
नये नये इन्होंने लक्ष्य वेधन में सत्यवादी प्रकाश में । इन्होंने लक्ष्य वेधन में
ने भी लक्ष्य वेधन में प्रकाश में प्रकाश में । इन्होंने भी प्रकाश में
अन्यथा भी प्रकाश में । प्रकाश में प्रकाश में प्रकाश में प्रकाश में
जो प्रकाश में प्रकाश में प्रकाश में प्रकाश में प्रकाश में प्रकाश में

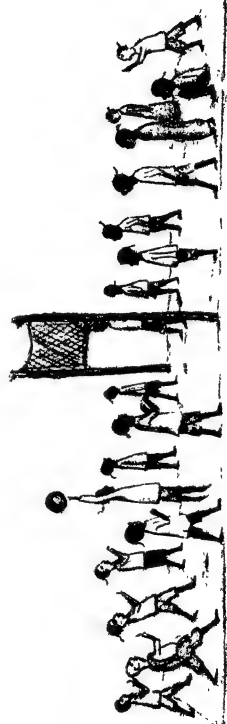
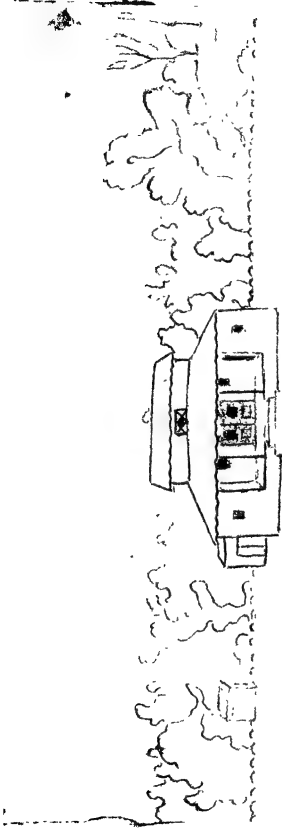
[illegible]

अभ्यास



નિરાને ભાગ્ય ભરે છે । ગિરોડર સિલ્કી ભી તો વીનાં મંગાં ને અપરણી બ-
 ન્દ જાતે એ જાંર ભાગી છુદુ પડે છે । ભઈ ગિરોડર ખી રખ લો તલિય
 ઉતિયક્ષી એ જાંર હી જાતે છે । મે મિયો કુર, વશાભી બો સાગર બે જિર
 તો ઇસ્યવત્ત બે સુમુદ બે સુમુદ બો વેતે છે । રચ ને વાદ પ્રિ ભાવ વીર નો
 નામી જઈ. રચે એર જોવા તજી વાદામ તો રંગી કર્મોદ જાતે ભયે મંગેરુજી મો
 રવ મલબે હોયે કુર ખી સિલ્કાડિમે ને જિસ વચગત્તેર ને કનકો વાર મિય
 ને મલિય મે એકે નીવન બે જિર પુત્રી અદામ્મ હોય । રચ નીવન રૂપી અંમર
 ને મોમ મે મંગેરુ ભરિયારી ભા કોમલ મિય પુત્રી કિય જા સંભળ હે મસ પુત્ર
 ભા રચ પુત્રેર સિલ્કી જોતો હંસો કુર વે રહ્યા । રચ નીવો ભામી એ વાદ
 જાગ ને પુત્રિય વિચ ભઈ ભાવ નિહી અમપુ હે મદી

એવમે ઉકસિય હોયે વાળો બે ગિર ઉચિત પુત્ર ના । રચિત તથા
 કુચિત બી કુર ખી યામ: મુકુત્ર ને અવ માવનીય સુગા દુદ સ્વેત મે
 ઉકસિયત બે । હીમ મની નો ભા ગત્તેર વેસાગે લામ્બ વા । રચો ને જિય ખરિય
 કો જાગ ભામ મિય હે વદ મલિય ને જોત બોલો હીમ મનિયો બે ગિર
 અપરણીય રહેગા ।



क्रिया पत्र

[illegible][illegible][illegible]

कभी कभी मेरा हृदय भी न ले पाए थे जो मुझे दुःखानि का भेद न समझी

"सुदधानवर्धन आश्रम" या द्वितीय दिवस चर्चा ३०
पर वर्णन.

[illegible][illegible]

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 भावों में अपनी सुविधाओं में मैं आने वाली निन्दन पर प्रेषी बांध कर लक्ष्मी
 अर अर ॥ वरना अरने पीछे ल. व. और सुखित भावों को वंग में गोस ॥ ५ ॥
 मे मिलान गुणों की सवारी कभी न कर रहा था । पुद्गल पर मोम डुबा
 कि ये खिलवा, इतने मोम के हैं, एरिअण्ड के रंगे नागे हैं । और प्रेयुगम
 में हनुमान में मछुर रहे । आपने सगरी बस जगना में सेमी कभी
 उल्लूकते को देख लुगान की पीठ कोने बरसों की पेड़ों में पेड़ों पर उल्लूक
 हल और प्रारोपण वही मर कर दिखो ही खिल लुका ले रहे । मर -
 जगनाश्रित्य पिछले ॥ अने में आपने सगरी देखने नमी बह डुई की वर
 इसको देख कर आपने माय और मयाद वर की के दिशोक को सराव दिशोक
 में देखेंगे । इन खेलों के नाम वाम तो मोम ॥ ५ ॥ प्रेयुगम पर जो लुगान
 भावों में मोम ॥ ५ ॥ के मर रहे -

विष्णु कर्म अथवा श्री गणेश जी और योगेश्वर श्री देवनाथजी

"सुदधानद-बीज-सामुख्य" १११ वीं दिवस

"सुदधानद-बीज-सामुख्य" १११ वीं दिवस
(श्री शिवभक्तजी)

शुद्धाद सुमुख्य का वीर्य दिवस उसी स्थान पर उसी स्थान बड़ी सज्जन से मया
जता देखकर हृदय बहुत प्रसन्न हुआ। बैठकी उल्लासपूर्ण गाय कर्तों में गुंन रहा धामि सज्जन
राक्षस गीत में सोने की लुगाध का कण किया। सोने वाले के अंग-अंग फट्टक उठे। लम्बी
कूट का सामुख्य होने से धरिले 'बेड़ दौड़' धारणा हुई। व्याघ्र शाला के सज्जन का विशा-
ल बीज भेज दौड़ के लिये नियत किया गया था। स्थित मौन्यकर आशा से भरे लुप्त छोटे तो
लुप्त दीर्घकाय दोड़े वाले दौड़ने लगे। देवराज उड़ जैसे अनेक कर्तों में देवों से आगे रहते हैं
जैसे ही इस बात में भी सब से आगे आगे उल्लेख को नई बात नहीं। व. राज सुहाव जी में भी
जदर सज्जनले स्थला, बहुत न फिट्टे, दूसरे पर आ उतरे। दौड़ का 'रुद्रिमा' हमारी राग में
लुप्त भेड़ा था। २ फलंग या ६ फलंग कण से कम होता चाहिये था। शायद जलती जी
को स्थान से अलाउ (allow) न किया हो; और। अब लम्बी कूट का सामुख्य आरहा है,
लम्बे-लम्बे, दीर्घकाय, झिलझिलवाले नवभुक्त बलुगारी शर्वास भरते हुए बेचारी धरा
पर मैके बेजोंके निर्दयता से पिच (Pitch) देते हुए लगे जमीन को मारने। स्थान
हमारे भी पूर्व परिचित रजनाग धन्य इन्द्रदेव ही आगे रहे। आपने स्वर्ग के सामुख्य से
समुच्च न बरकर प्रलोक को भी बड़े बरकरों से प्राप्त ही तो जाल। आप १८ फीट द. इन्द्र
कूट, जोकि Ideal कूट थी। मुब रही। द्वितीयक में यहां पर भी हमारे राज बाबू ही आप
मालूम होता है इन्होंने देवराज उड़ का पीछा न छोड़ने की हानी थी। तीसरे धेनुदेव का
दौड़ समी हुई जगती थी, अपनी शाग की गहरी रुक थी। व. सुरेष्ठ की दूर भी लुप्त ऐसी
बैसी न थी, हमारी आशाओं से वहीं अधिक थी। अब धक्का

अब धरा को तप से ही समुच्च न कर आश्वास पर धावा भोलो की
वीरों ने हारली, लगे अंग उल्लेख। हमारी राग में कूटने की सज्जन, कालाभी
आदि आदि हैं। सुरेष्ठ अधिक प्रिय लगते थे। उका राज भी तो आप ही रहा न।
कोने हो। फल परीक्षणरिणाग आनी निकला तो नहीं। तेभी जगण से मही किहु हुआ
है कि व. विश्ववीर ही इस बात में बाणी मार ले गये हैं। तो भी हम व. सिद्धेश्वरी
की प्रार्थना किन्ने बिना न रहेंगे। आप की खुद भी अच्छी थी। शायद आपको
अपनी लम्बाई का प्रयत्न मिला हो, पर प्रयत्न में गहतो कोई न ही देवराज प्रियकाय
तप भी धीरे धीरे धीरे से कूटते रहे। इसलिए इन्होंने भी कण से कम हज
वार तो "वा-वाट" या "खुद न खुद" कहल का ही तो लिया।

छीमपत्र

अब उत्तुलज तथा मल्ल प्रतियोगिता शुरू होता है। यहाँ जनता किचका-प्रोत्साहक। सब तो सिस्त्रिमे लगते थे। करागत दिखाने कोई न आया प्रतीत होता था परन्तु आगे थे कसरत करते या अभ्यास करते। हम अपने तहे दिल से श्री राजेन्द्र कुशा की खूब प्रशंसा करेंगे। आपने जितने व्यर्थ दिखाने, सधे हुए प्रोत्साहित करने - जयते थे; खफ थे। आपका शरीर भी इसकी गन्ना सध २ देता था कि नारी आती है श्री विद्यान की। आप हैं दोरे पर उसके प्रभावले मैं काम रखूँ पर दिखाना। न दशक गन ही गन 'रखूँ - खूब' करते थे। आपका भी शरीर कसरत के companion मैं था। हम आशा करते हैं कि श्री निवानद इस विद्यार्थी में दृढ़ इतकित हो लगे रहे होंगे तो वे उत्तम सफल होंगे। इनके अतिरिक्त छलकारी प्रेम सागर जी व. हलदेव जी छादरीय रख रहे। सबसे अधिक प्रशंसा के थे दोनप्रभाकर; एक भी देखा था, दूसरे भी देखा था। आपने कभी इसका मैं हाथ भी कभी न लगाया होगा। पालु तो भी पहिली बार की कोशिश में ही कदमों से बहिर्गो रहे। इस विद्यानका परिणाम इतक खबर ले है।—

Rings - प्रथम श्री राजेन्द्र, द्वितीय श्री निवानद तथा श्री देवनाथ।

टूजेडी - प्रथम श्री राजेन्द्र, द्वितीय श्री देवनाथ जी,

पैरल बार - प्रथम श्री निवानद, द्वितीय श्री राजेन्द्र।

अब गोल्ला कैकने की नारी आती है। यह कोई गजली बात नहीं। आजकल भारत की विधिति को देखकर गोला कैकना उचित तो क्या आवश्यक-कर्म्य लगता है। सीधा गोला कैकने में व. इन्द्र अपनी त्वागामिका आदर के अग्रज प्रभा रहे। द्वितीय ३० फीट के करीब गोले की मर्यादा १-२० का भोः था। हमने आत्मानन्द जी का भी गजब रहे। उसने दो बार बाद तो छीइन्द्र की कै दिल को सुशक कर दिया था। बहुत आदर किहीं कारणों से आप द्वितीय रहे। कलौभी इसका बल आपने उलटा गोला कैकने में निकाल दिया और प्रथम निकल आये। व. देवनाथ चतुर्थ द्वितीय रहे। गोला मर में व. सुरेन्द्र भी खूब रहे। छोटे झग की कोटि में न आये हों पर ऊपर तो जाते ही थे। अबू नडी तो तब प्रभा आनेगे ही।

अब एक रसमयी, रुसम गरी लुगी दीउ दौड़ी आयी। यह खूब रही। इस में कौन विजयी रहे ? जिसके जीते की आपत पड़ गयी। वही पहली पराधी - वे थे व. इन्द्र। आप और वल्ल। सत्यदेव जी ने जगता को खूब हंसाया। वेगो हीउ-चो Players थे। इस प्रकार प्रतियोगिता सातव्य के गलिय विविध के पुनः कल की काजिगी समाप्त हुआ। अज की खेलों में सबसे खूब आपका अनुभव किया। खेल खूब सफल रहे। दशकों का अजल वृत्त न गया। आज भी हम अपने अग्रज उताही, नानशील, निपुण नानी जी व. प्रशिक्षा शब्दों में न करते हुए तहे दिल से कहेंगे

संस्कृत —



शंकरदेवजी ज्ञान-

सत्यं वचनं :

[illegible]

005694

लम्बी तैरी

ब. देवनाथ.

५. ३५.

ब. इन्दिरा

५. ३६

ब. धीरेन्द्र

५. ३७

ब. चित्रांगद को द्वितीय ~~है~~ इनाम है १००० रुका ली है
उआ *

सिंह तैरी-

ब. चित्रांगद - २ मि. ५ से. मि. ३.

ब. देवनाथ + ब. आकाश - २ मि. ८ से. २० से. ५.

श्री वासुदेव जी V. A. निरीक्ष. १ मि. ४ से. १० से. ५.

